



सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

लोक सेवक
के
कर्तव्य, दायित्व एवं अपेक्षाएं



हरिश्चन्द्र माथुर राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान

प्रस्तावना

लोक सेवा का तात्पर्य नागरिकों के जीवन को सुगम, सुरक्षित और समृद्ध बनाने के उद्देश्य से सरकारी सेवाओं में कार्यरत कर्मचारियों से है। "अहर्निश सेवामहे" तथा "धर्मचक्र प्रवृत्तनाय" के ध्येय को ध्यान में रखते हुए दिन-रात सेवा व सभी के साथ न्याय के मार्ग का अनुसरण करने के लिए नव नियुक्त लोकसेवकों के कर्तव्यों और दायित्वों को समझना और उनका पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह दस्तावेज नव नियुक्त लोकसेवकों के लिए उनके कर्तव्यों और दायित्वों का विस्तृत विवरण प्रदान करता है, जिससे वे अपने कार्य को प्रभावी ढंग से और जिम्मेदारीपूर्वक निभा सकें। हम सभी को विकसित भारत का संकल्प@2047 की सिद्धि में अपनी सशक्त भागीदारी के लिए पूर्ण मनोयोग से तैयार रहना है।

1. नियमों का पालन:

कानूनी और प्रशासनिक नियमों का पालन:

नव नियुक्त लोकसेवकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने संबंधित विभागों के सभी कानूनी और प्रशासनिक नियमों का पालन करें। उन्हें संविधान, सेवा नियमावली और विभागीय दिशानिर्देशों का गहन अध्ययन करना चाहिए और अपने कार्यों को उनके अनुसार संपादित करना चाहिए।

आचार संहिता:

लोकसेवकों के लिए एक स्पष्ट आचार संहिता होती है, जिसमें उनके कार्यों और आचरण के मानदंड निर्धारित होते हैं। इस आचार संहिता का पालन करते हुए उन्हें अपने व्यक्तिगत और प्रोफेशनल जीवन में उच्चतम नैतिक मानकों का पालन करना चाहिए।

2. समयबद्धता और नियमितता:

समय पर कार्यालय पहुंचना:

समय की पाबंदी किसी भी पेशेवर व्यक्ति की सफलता का मूलमंत्र है। लोकसेवकों को निर्धारित समय पर अपने कार्यस्थल पर उपस्थित होना चाहिए और अपने कार्य को समय पर पूरा करना चाहिए।

नियमित उपस्थिति:

नियमित उपस्थिति न केवल उनके कार्य की गुणवत्ता को बढ़ाती है, बल्कि उनकी प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता को भी बनाए रखती है। बिना उचित कारण और पूर्व अनुमति के अनुपस्थिति अनुशासनात्मक कार्रवाई का कारण बन सकती है।

3. ईमानदारी और पारदर्शिता

ईमानदारी:

लोकसेवकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्य में पूर्ण ईमानदारी और निष्पक्षता का पालन करें। उन्हें किसी भी प्रकार की अनैतिक गतिविधियों और भ्रष्टाचार से दूर रहना चाहिए।

पारदर्शिता:

पारदर्शिता लोक सेवा का महत्वपूर्ण अंग है। लोकसेवकों को अपने कार्यों और निर्णयों में पारदर्शिता बनाए रखनी चाहिए, जिससे जनता का विश्वास उन पर बना रहे।

4. गोपनीयता की सुरक्षा:

गोपनीय दस्तावेजों का संरक्षण:

लोकसेवकों को अपने कार्य से संबंधित महत्वपूर्ण गोपनीय दस्तावेजों और जानकारियों की गोपनीयता बनाए रखनी चाहिए। इन दस्तावेजों का दुरुपयोग या अनुचित प्रकटीकरण गंभीर दुराचरण माना जाता है और इसके परिणामस्वरूप कड़ी कार्रवाई हो सकती है।

जानकारी साझा करने में सतर्कता:

लोकसेवकों को किसी भी गोपनीय जानकारी को साझा करने में अत्यधिक सतर्कता बरतनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह जानकारी केवल अधिकृत व्यक्तियों तक ही पहुंचे।

5. जन सेवा और संवेदनशीलता:

जनता के प्रति उत्तरदायित्व:

लोकसेवकों का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा करना है। उन्हें जनता की समस्याओं को सुनना और उनका समाधान करना चाहिए। उनकी सेवा का उद्देश्य नागरिकों के जीवन को सुगम और सुरक्षित बनाना होना चाहिए।

संवेदनशीलता:

लोकसेवकों को जनता के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए और उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उन्हें जनता की जरूरतों और समस्याओं को समझना चाहिए और उनका समाधान करने का प्रयास करना चाहिए।

6. उत्तरदायित्व और प्रतिबद्धता:

उत्तरदायित्व:

लोकसेवकों को 24x7 हर कार्य पूर्ण उत्तरदायित्व की भावना से करना चाहिए। आपकी एक लापरवाही नागरिकों के जीवन पर विपरीत प्रभाव डाल सकती है।

कार्य के प्रति प्रतिबद्धता:

लोकसेवकों को अपने कार्य के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता रखनी चाहिए। उन्हें अपने कार्य को उच्चतम गुणवत्ता के साथ संपादित करना चाहिए और अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वाह करना चाहिए।

7. प्रशिक्षण और विकास:

निरंतर प्रशिक्षण:

नव नियुक्त लोकसेवकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने कार्य को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए निरंतर प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों में भाग लें। इससे वे नई तकनीकों और कार्यप्रणालियों से परिचित हो सकेंगे और अपने कार्य में सुधार कर सकेंगे।

व्यक्तिगत और प्रोफेशनल विकास:

लोकसेवकों को अपने व्यक्तिगत और प्रोफेशनल विकास के लिए प्रयास करना चाहिए। उन्हें अपने कौशल और ज्ञान को निरंतर अद्यतन करना चाहिए, जिससे वे अपने कार्य को अधिक प्रभावी ढंग से निभा सकें।

8. सहयोग और टीम वर्क:

टीम के साथ कार्य करना:

लोक सेवा एक सहयोगात्मक प्रयास है। लोकसेवकों को अपने सहकर्मियों और अन्य विभागों के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। उन्हें टीम वर्क का पालन करना चाहिए और अपने सहयोगियों के साथ सहयोगपूर्ण संबंध बनाए रखना चाहिए।

सहकर्मियों के प्रति सम्मान:

लोकसेवकों को अपने सहकर्मियों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए। उन्हें अपने सहयोगियों के साथ मधुर संबंध बनाए रखना चाहिए और उनके साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

9. अनुशासन और विनम्रता:

कार्यस्थल पर अनुशासन:

अनुशासन किसी भी संगठन की सफलता का मूलमंत्र है। लोकसेवकों को कार्यस्थल पर अनुशासन का पालन करना चाहिए। उन्हें अपने वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों का पालन करना चाहिए और अपने कार्यों को निर्धारित समय सीमा में पूरा करना चाहिए।

विनम्रता:

लोकसेवकों को अपने कार्यस्थल पर और जनता के साथ विनम्र व्यवहार करना चाहिए। विनम्रता न केवल उनके व्यक्तिगत और प्रोफेशनल संबंधों को सुधारती है, बल्कि उनकी प्रतिष्ठा को भी बढ़ाती है।

10. सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा:

सार्वजनिक संपत्ति का संरक्षण:

लोकसेवकों को सार्वजनिक संपत्ति और संसाधनों की रक्षा करनी चाहिए। उन्हें इनका सही और प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए और किसी भी प्रकार की बर्बादी से बचना चाहिए।

संपत्ति का उचित उपयोग:

लोकसेवकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे सार्वजनिक संपत्ति और संसाधनों का उचित उपयोग करें और उन्हें किसी भी प्रकार के दुरुपयोग से बचाएं।

11. प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति के साथ स्वयं को अद्यतन करें:

तकनीकी क्षेत्र में तेजी से बदलाव हो रहे हैं, और इन बदलावों के साथ अद्यतन रहना आज के समय की आवश्यकता है।

आप निरंतर अपने ज्ञान और कौशल को नवीनतम तकनीकी प्रगति के अनुसार अद्यतन करते रहें। नई तकनीकों, उपकरणों और प्रथाओं के बारे में सीखना न केवल आपके व्यक्तिगत और पेशेवर विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमारे संगठन की सफलता में भी अहम भूमिका निभाएगा।

निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दें:

ऑनलाइन कोर्सेज:

इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न प्लेटफार्मों पर नवीनतम तकनीकी कोर्सेज और सर्टिफिकेशन प्राप्त करें। तकनीकी सम्मेलनों, वेबिनार्स और फोरम्स में भाग लें और विशेषज्ञों से संपर्क बनाए रखें।

परिवर्तनों पर नज़र रखें:

कानूनों, नियमों, प्रक्रियाओं, टेक्नोलोजी एवं हितबद्ध लोगों की अपेक्षाओं में हो रहे नवीनतम परिवर्तनों और प्रगति पर नज़र रखें और उनसे संबंधित जानकारियों को प्राप्त करें।

महिला सम्मान एवं सामुदायिक दायित्व:

महिला सम्मान:

प्रत्येक लोक सेवक का यह परम कर्तव्य है कि वह महिलाओं से सम्मानपूर्वक व्यवहार करेगा तथा इसे बढ़ावा देने के लिए अग्रदूत की भूमिका निभायेगा।

सामुदायिक दायित्व:

प्रत्येक लोक सेवक का यह दायित्व है कि वह उच्चतर सिविक सेन्स विकसित करे, वृद्धजन एवं वंचित तबके के प्रति विशेष संवेदनशीलता रखें। वृक्षारोपण व जल संचयन को बढ़ावा देवें, पानी-बिजली अपव्यय एवं प्लास्टिक उपयोग को रोके। सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करें एवं सर्वत्र स्वच्छता को बढ़ावा देवें। दिव्यांगजन के प्रति विशेष सहयोग का भाव रखें। नशे की प्रवृत्ति से दूर रहे। पशु-पक्षियों के प्रति करुणा का भाव रखे।

निष्कर्ष:

नव नियुक्त लोकसेवकों के कर्तव्य और दायित्व न केवल उनके व्यक्तिगत और प्रोफेशनल जीवन को निर्धारित करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र की सेवा में उनकी भूमिका को भी परिभाषित करते हैं। इन कर्तव्यों और दायित्वों का पालन करते हुए वे न केवल अपने कार्य को प्रभावी ढंग से सम्पादित कर सकते हैं, बल्कि समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। प्रत्येक नव नियुक्त लोकसेवक को इन कर्तव्यों और दायित्वों का गहन अनुशीलन कर उन्हें अपने दैनिक जीवन में लागू करना चाहिए। इससे न केवल उनकी व्यक्तिगत और प्रोफेशनल प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, बल्कि समाज और राष्ट्र की सेवा में भी वे महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे।

* * *